STUDY MATERIAL

CERTIFICATE COURSE IN VEDIC STUDIES

JAGATGURU SHRI DEVNATH INSTITUTE OF VEDIC SCIENCE AND RESEARCH
12A, Wanjari Nagar, Nagpur.
Recognized by Kavikulguru Kalidas Sanskrit University, Ramtek

CERTIFICATE COURSE IN VEDIC STUDIES

Duration: 5 Months
Eligibility: One who has completed 16 years of age.
Admission: Open to all boys and girls
Medium: English, Hindi, Marathi
Marks: Total 100
Important Note: Learners performance shall be assessed by internal assessment with 40% marks.

JDVSR

MODULE- I VED AND VEDANG 25 MARKS

1. CHAPTER 1 – Basic Introduction 5 Marks
2. CHAPTER 2 – Classification and Detail Study 5 Marks
3. CHAPTER 3 – Relevance & Applicability 5 Marks

Internal Assignment 10 Marks

MODULE- II PURAN AND ITIHAAS 25 MARKS

1. CHAPTER 1 – Basic Introduction 5 Marks
2. CHAPTER 2 – Classification and Detail Study 5 Marks
3. CHAPTER 3 – Relevance & Applicability 5 Marks

Internal Assignment 10 Marks

MODULE- III SMRUTI AND DHARMASHASTRA 25 MARKS

1. CHAPTER 1 – Basic Introduction 5 Marks
2. CHAPTER 2 – Classification and Detail Study 5 Marks
3. CHAPTER 3 – Relevance & Applicability 5 Marks

Internal Assignment 10 Marks

MODULE – IV DARSHAN AND UPANISHAD 25 MARKS

1. CHAPTER 1 – Basic Introduction 5 Marks
2. CHAPTER 2 – Classification and Detail Study 5 Marks
3. CHAPTER 3 – Relevance & Applicability 5 Marks

Internal Assignment 10 Marks

MODULE 1
[I] वेद

- ✓ परिचय
- ✓ अध्ययन
- ✓ वेदों का वर्गीकरण
- ✓ वेद शाखा
- ✓ वेदों में वर्णित विषय
- ✓ वेदों में विज्ञान
- ✓ वैदिक अध्ययनकी आवश्यकता

❖ परिचय:

वेद सृष्टि के आदिकालसे हैं। हमारी परम्परा कहती है, कि किसी ने इन्हे नहीं लिखा अपितु यह वास्तव में भगवान द्वारा प्रकट हुए । इसीलिए वेद किसी मनुष्य की रचना नहीं हैं, वे अपौरुषेय हैं । वेद शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के शब्द विद् - 'जानना' से हुई है, जिज्ञासा से जान लेना। इस धातु से कुछ शब्द जैसे विदित - ज्ञात , विद्या - ज्ञान, विद्वान - ज्ञानी भी बनते हैं।

वेदों को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

" इष्ट प्राप्ति अनिष्ट परिहारयोः अलौकिकं उपायं यो ग्रन्थः वेदयति स वेदः | "

❖ अध्ययन:

वैदिक ग्रंथों का अध्ययन गुरुकुल पद्धति से किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से दो पद्धतिओं को देखने मिलता है,

१) **कर्मकांड** –

इसमें वेदमंत्रों का संरक्षण और वैदिक संस्कारों का जतन कर्म के माध्यम से किया जाता है। वेदोपर आधारित इस भागमे समाज और सामाजिक व्यवस्था के अनुसार व्यक्ति, परिवार, राष्ट्र के लिए आवश्यक क्रियाएँ तथा उनकी कल्याण की कामना करने वाले संस्कार, व्रत,

उत्सव और यज्ञ आदि का भी समावेश होता हैं। इसमे वेदमंत्रों के पठन और क्रिया को प्राधान्य दिया हुआ दिखाई देता है।

२) **ज्ञानकांड** -

इसमें व्यक्तिगत परन्तु समाजनिष्ठ ज्ञान का समावेश दिखता हैं। वैदिक शिक्षा यह ज्ञान, संस्कार और कौशल्यपर आधारित हैं। वेदमंत्रों की मूल अवधारणाओं का चिंतन, मनन एवं उनकी अनुभूति की प्राप्ति आदि विविध ज्ञान प्रचुर बातोंका विवरण इसमे समाविष्ट किया गया हैं।

❖ वेदों का वर्गीकरण:

वैदिक इतिहास के अनुसार, वैदिक मंत्रों का केवल एक ग्रन्थ था, जिसे संहिता कहा जाता था। महर्षि वेदव्यास ने द्वापर युग के अंतमें इसे चार मुख्य विभागों में वर्गीकृत किया। ये चार विभाग **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद** के नाम से प्रख्यात है जिन्हें क्रमशः **पैल, शंपायन, जैमिनी और सुमंतु** इन चार शिष्यों को पढ़ाया गया। इनका विवरण निम्नानुसार हैं-

- **ऋग्वेद** –

  ऋग्वेद में समाविष्ट मंत्रों को ऋचा कहते हैं। ऋचाओं का संकलन होने से भी इसे ऋग्वेद कहते हैं। इसमें कुल १०५५२ मंत्र और १०२१ सूक्त हैं। इसमे प्रस्तुत विभिन्न सूक्तों में विविध प्राकृतिक देवताओं जैसे अग्नि, वायु, पर्जन्य, औषधी आदि के वर्णन एवं स्तुती, सृष्टी विषयक ज्ञान और उनके रहस्यों का विवरण दिखाई देता है।

- **यजुर्वेद** –

  इसमें लगभग २००० मंत्र हैं और उसमे कर्म, क्रिया और समर्पण आदि से संबंधित विविध विषय दिखाई देते है। समाजव्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्य, संस्कार, यज्ञ-याग आदि विधान तथा राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य आदि विवरण इसमे प्राप्त होते है।

- **सामवेद** –

  इसमें लगभग १९७५ मंत्र हैं जिनका सामगान किया जाता हैं। इससे संगीत और अन्य कलाएँ विकसित हुई हैं। जिन मंत्रों के उच्चारण से ज्ञानप्राप्ति होती हैं उन्ही मंत्रोद्वारा भावजागृति की अनुभूति तथा अंतर्ज्ञान की प्राप्ति होती हुई इसमे दिखाई देती है।

- **अथर्ववेद** –

  इसमें ७२६० मंत्र हैं और इसमें विविध पदार्थ के गुण, धर्म, तंत्र तथा आरोग्य विषयक विस्तृत विवरण दिखाई देता है। इसे चौथा वेद भी कहा जाता है क्योंकि यह उपरोक्त तीन वेदों में शामिल कुछ विषयों को पुनः प्रकाशित करता है।

❖ वेद शाखाए :

एक ही वेद का भिन्न भिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट पद्धतिओंसे से पाठ किया जाता था, जिससे इसकी अलग-अलग शाखाएँ बनीं।

- ऋग्वेद - शाकल, बाष्कल
- यजुर्वेद - तैत्तिरीय, काण्व, माध्यंदिन
- सामवेद - कौथुम आणि जैमिनीय
- अथर्ववेद - शौनक आणि पैप्पलाद

ये शाखाएँ पूरे भारतवर्ष में वेदों के पठन और उनके संरक्षण के लिए किए गए व्यापक प्रयासों को दर्शाती हैं।

❖ वेदों में वर्णित विषय :

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद आदि वेदों में यद्यपि अनेकविध विषय है किन्तु मुख्यतः ज्ञान, कर्म, उपासना एवं तंत्र-औषधि यह विषय इसमें दिखाई दते है |

कई विद्वानों ने वेदों में वर्णित विभिन्न विषयों पर अभ्यासपूर्वक विभिन्न टिकाए लिखी हैं। प्रत्येक टीका में एक ही मंत्र के नए –नए गर्भितार्थ प्रकट होते दिखते है, जिनमें से कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत करते हैं -

१) ऋग्वेद में जलचक्र

हमने देखा कि ऋग्वेद में ज्ञान की विभिन्न शाखाए दिखाई देती है। इसके प्रथम मंडल में इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण स्कूली शिक्षा में पढ़ाया गया जल चक्र है, जिसे हम WATER CYCLE कहते हैं |

समानमेतदुदकं उच्चैत्यवचाहभिः |
भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्ति अग्नयः ||
{ ऋ.१.१६४.५१ }

अर्थ:

पृथ्वी पर जल की मात्रा स्थिर है , वह जल ऊपर जाता है और नीचे भी आता है। पर्जन्य से पृथ्वी को तृप्त करता है और अग्नि से आकाश को तृप्त करता है।

२) यजुर्वेद में राष्ट्राभिवर्धन मंत्र

शुक्ल यजुर्वेद के अध्याय २२ में राष्ट्राभिवर्धन मंत्र है जो राष्ट्र के विभिन्न वर्गों के सुख और समृद्धि की कामना करता है और कल्याण के लिए प्रार्थना करता है। यह वेदों द्वारा लक्षित राष्ट्रीय चिंतन का एक उत्तम उदाहरण है।

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यः अति
व्याधी महारथो जायताम्
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः
पुरंध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो
युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्
योगक्षेमो नः कल्पताम्॥

{ शुक्ल यजुर्वेद - अध्याय २२, मन्त्र २२ }

अर्थ:

हे ब्रह्मन (परमेश्वर), हमारे राष्ट्र में ब्राम्हण ब्रह्म तेज से समृद्ध हो और क्षत्रिय शूरवीर, धनुर्धारी और महारथी हो। हमारा पशुधन समृद्ध हो जैसे दूध देनेवाली गौए, कष्ट करनेवाले बैल, शीघ्रगामी घोडे आदि। यहाँ की नारीशक्ति सारे नगर को धारण करे और यहाँ की सभा में उपस्थित युवा शक्ति लोगों और समाज का कल्याण करनेवाली और विजयश्री और वीरता को प्राप्त करने वाली रहे। पर्जन्य देवता इस वसुंधरा पर यथेच्छ वर्षा करे, ताकि यहां विपुल अनाज और औषधियों का उत्पादन हो सके। हम योग (अप्राप्य चीजों की प्राप्ति) और क्षेम (प्राप्त होने वाली चीजों का संरक्षण) का वहन करनेमे समर्थ हो ।

३) अथर्ववेद में शरीर शास्त्र

अथर्ववेद में शरीर शास्त्र विषयक कुछ मंत्र दिखाई देते है, जैसे

केन पार्ष्णी आभृते पूरुषस्य केन मांसं संभृतं केन गुल्फौ |
केनाङ्गुलीः पेशनीः केन खानि केनोच्छलंखौ मध्यतः कः प्रतिष्ठाम् ||
.....चित्वा चित्यं हन्वोः पूरुषस्य दिवं रुरोह कतमः स देवः ||
{ अथर्ववेद १०.२.१-८ }

SR NO	NAME IN VEDAS	NAME IN ENGLISH
1.	अस्थि	Bone
2.	पार्ष्णी	Heels
3.	गुल्फौ	Ankles
4.	अङ्गुलीः	Fingers
5.	उच्छलङ्खौ	Metatarsals(any of the bones of the foot)/ Metacarpals(any of the five bones of the hand)
6.	अष्टिवन्तौ	Knee caps/ Patellae
7.	जङ्घे	Tibia and Fibula in Leg
8.	जानुनोः सन्धी	Knee Joint
9.	श्रोणी	Pelvic Cavity
10.	ऊरू	Thighs
11.	उरः	Chest Cavity
12.	ग्रीवाः	Wind Pipe
13.	कफ़ोडौ	Shoulder Blades/ Scapulae
14.	स्कन्धानौ	Shoulder Bones
15.	पृष्ठीः	Back Bone
16.	अन्सौ	Collar Bones
17.	ललाटम्	Brow
18.	ककाटिका	Central Facial Bone
19.	कपालम्	Cranium (the skull, especially the part enclosing the brain) with Temples (the side of the head behind the eye between the forehead and the ear)
20.	चित्यं हन्वोः	The Pile of Jaw
21.	जिह्वाम्	The Tongue

❖ वेदों में विज्ञान :

वेदों में गणित, बीजगणित, ज्यामिति के साथ-साथ जीवशास्त्र, रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, विभिन्न कला, वाणिज्य, यांत्रिकी, भौतिकी, खगोल शास्त्र आदि जैसे कई वैज्ञानिक अवधारणाओं के संदर्भ और बीज देखने मिलते हैं, जो वेदों के साथ विज्ञान के संबंध और वेदों के वैज्ञानिक महत्व को सिद्ध करते हैं।

इसके अलावा, विभिन्न सूक्त और उनके विषय इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, मानसशास्त्र , धर्मशास्त्र और न्यायशास्त्र के सिद्धान्तोको स्पष्ट करते है।

❖ वैदिक अध्ययनकी आवश्यकता :

- पूर्वापार भारत में गुरुकुल शिक्षण पद्धति विद्यमान थीं जिनमें वेदों का अध्ययन विभिन्न अन्य ग्रंथों के साथ किया जाता था।
- लेकिन अंग्रेजों के आने के बाद, शिक्षा की इस प्रणाली में बदलाव किए गए, जिस कारण व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर संस्कार, धर्म, कर्तव्य, नैतिक मूल्यों, परंपराओं के बारे में जनमानस में संभ्रम निर्माण हुआ।
- आज वैदिक शिक्षा की कमी के बावजूद, वैदिक जीवन पद्धति का पालन सनातन संस्कृति मे अभी भी किया जाता है। लेकिन इन पद्धतियों के के मूल हेतु और प्रधान उद्दिष्ट स्पष्ट नहीं होते |
- इसके परिणामस्वरूपी वेदों और हमारी परंपराओं के बारे में उदासीनता प्रतीत होती है। जिस कारण हमारे सांस्कृतिक विकास और जीवन की समग्र गुणवत्ता में गिरावट आ रही दिखाई देती है |
- इसीलिए सनातन वैदिक धर्म को प्रतिष्ठित करनेवाले, मूल तथा सबसे प्राचीन, वैदिक ग्रंथों का प्राथमिक अध्ययन महत्वपूर्ण है।
- इसके अध्ययन से वैचारिक मलिनता को दूर करते हुए स्वयं प्रज्ञा और प्रगल्भता को बढ़ावा देना अत्यावश्यकता है।

❖ शब्दार्थ :

- इष्ट : कल्याणकारी
- कर्मकांड : कर्म विषयक प्रकरण
- ज्ञानकाण्ड : ज्ञान विषयक प्रकरण
- गर्भितार्थ : गूढार्थ

❖ प्रश्नावली :

- वेद की व्याख्या स्पष्ट कीजिए |
- वेदों का किन पद्धतियों से अध्ययन किया जाता है ?
- विविध वेद तथा उनकी शाखाओं का सविस्तर विवरण लिखिए |
- वेदों में वर्णित विभिन्न विषय सोदाहरण स्पष्ट कीजिए |
- साम्प्रत वेदों के अध्ययन की क्या आवश्यकता है ?

❖ आगे पढ़ने हेतु :

- वेदकथा अंक, गीताप्रेस, गोरखपुर
- वैदिक साहित्याचा इतिहास

JSDIVSR

MODULE 1

[II] वेदांग

- ✓ परिचय
- ✓ वेदांग ग्रंथो के प्रकार
- ✓ अध्ययन का हेतू
- ✓ वेदांग ग्रंथो का विवेचन
- ✓ महत्त्व एवं उपयोगिता

❖ परिचय :

वेद + अंग = वेदांग, ऐसी इस शब्द की व्युत्पत्ति की जाती है | इसलिए इसे वेदों के अंग ऐसे भी कहा जाता है | यद्यपि वेद यह अपौरुषेय है, वेदांग यह मानवनिर्मित है | इसकी परिभाषा करते समय उपरोक्त बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है -

- वेदांग ऐसे ग्रन्थ है, जिनकी निर्मिती यह वेदों में अंतर्भूत मूल ज्ञान (वैदिक बीज) से हुई है | उदा: कल्प , उपवेद, ज्योतिष्य आदि |
- वेदों का आकलन करते समय भाष्यकार और विद्वानों ने विविध पद्धतियों को स्वीकार किया | इन विविध पद्धतियों को दर्शाने वाले ग्रंथो का भी समावेश वेदांग में होता है | उदा: शिक्षा, निरुक्त, निघंटु आदि |
- संक्षेप में वेदों का महत्त्व समझाने के लिए आवश्यक तथा निर्मित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ वेदांग कहलाते है |

❖ वेदांग ग्रंथो के प्रकार एवं अध्ययन का हेतू :

वेदांगो का अध्ययन परंपरा से आजभी किया जाता है | वेदों का सखोल अभ्यास करने के लिए इनका उपयोग होता है | इनका अध्ययन करते समय तीन मुख्य हेतु दिखाई देते है |

JSDVSR

❖ वेदोके अभ्यास के लिए उपयुक्त ग्रन्थ :

- **वेद रक्षण** :

  वेदमन्त्रो का रक्षण करना, यह इसके अध्ययन का प्रधान उद्दिष्ट रहा है | यह अपौरुषेय है इसलिए इसका मौखिक परंपरा से रक्षण किया गया | इसलिए वेदमंत्रो के उच्चार तथा पठन शुद्ध रखने हेतु व्याकरण शास्त्र और उच्चार शास्त्र का अध्ययन आवश्यक हुआ | इसलिए शिक्षा, छंद, प्रातिशाख्य और पाणिनीय अष्टाध्यायी (व्याकरण) आदि विविध ग्रंथो की निर्मिती हुई | इसके द्वारा स्वर, संधी, विग्रह इनके अभ्यास से वेदमंत्र एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को पढाए जाते है |

  उदाहरण :

  अष्टौस्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा।
  जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौच तालु च॥
  { पाणिनीय शिक्षा, श्लोक १३ }

  प्रस्तुत श्लोकानुसार वर्णों के उच्चारण स्थान यह उर, कंठ, शीर, जिव्हामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु ऐसे आठ है | जैसे -

- दन्त - त, थ, द, ध, न।
- ओष्ठ - प, फ, ब, भ, म।
- कंठ - क, ख, ग, घ, ङ्।

इत्यादि.

- **कर्म कांड** :

  वेदों को अभिप्रेत विविध याग और तत्संबंधी प्रयोग, अनुष्ठान तथा उनका विनियोग आदि का समावेश कर्मकांड में किया जाता है | इसकी आवश्यक जानकारी देनेवाले

ज्योतिष्य, श्रौतसूत्र, ब्राहमण ग्रन्थ आदि ग्रंथो का समावेश इस प्रकार में होता है | इस के द्वारा भी वेद मंत्रो का संरक्षण किया जाता है |

- **वेद भाष्य** :

  इस में निरुक्त, निघंटु, उपनिषदे, आरण्यके आदि वेदांग ग्रंथो का समावेश होता है | वेद संहिता में उल्लेखित विविध देवता, उनके कार्य, शब्द व्युत्पत्ती, सामान्य अर्थ, गूढार्थ तथा हेतू यह इन ग्रंथो के अध्ययनसे स्पष्ट होते है | इसलिए वेदों के भाष्य या अर्थसम्बंधित अध्ययन के लिए इनका अध्ययन किया जाता है |

उदाहरण :

प्रस्तुत उदाहरण में पृथ्वी के संदर्भ में वेदों में आए हुए विविध समानार्थी शब्द दिखाई देते है -

गौः | ग्मा | ज्मा | क्ष्मा | क्षा | क्षमा | क्षोणी | क्षितिः| अवनिः | उर्वी | पृथ्वी | मही | रिपः | अदितिः | इळा | निर्ऋतिः | भूः | भूमिः | पूषा | गातुः | गोत्रेति एकविंशतिः पृथिवी नामधेयानि ||(निघंटु १. १)

❖ वेदोंपर आधारित साहित्य :

- **उपवेद** :

  वेदों में वर्णित विविध विषयो को संशोधित करने पर या उस ज्ञान को मानवी स्पर्श होने पर उसकी एक स्वतन्त्र ज्ञान शाखा या ग्रन्थ की निर्मिती होती है, जिसे उपवेद कहा जाता है | जैसे आयुर्वेद, अर्थशास्त्र, धनुर्वेद, संगीत इत्यादी | विविध कला, विद्या तथा शास्त्रों का भी इस में समावेश दिखाई देता है |

उदाहरण:

आयुर्वेद के चरक संहिता, सुश्रुत संहिता इ. में वर्णित विविध प्रकरणों के मूल बीज यह अथर्ववेद, ऋग्वेद आदि में देखने मिलते है | इसलिए इस मानव संशोधित ज्ञान प्रकरणों को आयुर्वेद (आरोग्य से संबंधित) नामक उपवेदा में समाविष्ट किया हुआ दिखाई देता है |

- **संस्कार और सदाचार** :

  धर्म, संस्कार तथा सदाचार यह भारतीय संस्कृति के मूलाधार है | विदेशी आक्रमणों के बावजूद आज हमारी संस्कृति एवं सभ्यता अबाधित है, जिसका कारण हमारे पूर्वज तथा उनके द्वारा निर्मित यह ग्रन्थ रचनाएं है, जिन्होंने समाजरचना और समाज व्यवस्था बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाइ | इन सब का सखोल विचार तथा वेदोक्त आकलन करने के लिए गृह्यसूत्रे, धर्म सूत्रे, स्मृती आदि ग्रंथो का अध्ययन करना आवश्यक है, जो वेदांग ग्रंथो में समाविष्ट होते है |

उदाहरण:

अथैनामपराजितायान्दिशि सप्तपदान्यभ्युत्क्रामयतीष एकपद्यूर्जे द्विपदी रायस्पोषाय त्रिपदी मायोभव्याय चतुष्पदी प्रजाभ्यः पञ्चपदी ऋतुभ्यः षट्पदी सखा सप्तपदी भव सा मामनुव्रता भव पुत्रान्विन्दावहै बहून्स्ते सन्तु जरदष्टय इति |
{ आ. ग्रुह्यसुत्र १.७.१९ }

अर्थ:

अन्न के लिए पहिला, ऊर्जा, बल इत्यादी के लिए दुसरा, सुख समृद्धी के लिए तीसरा, संपन्नता के लिए चौथा, प्रजा के लिए पाचवा, ऋतू के लिए छटवां, मैत्री और सख्यत्व के लिए सातवा ऐसे सात हेतुओं की पुर्तता के लिए हम परस्पर एक दूसरे को अनुकूल हो, ऐसी प्रतिज्ञा करते हुए सुख से संसार करना चाहिए |

❖ वेदों को प्रतिबिंबित करनेवाले :

पुराण, इतिहास, संत साहित्य आदि कुछ ग्रन्थ है जो वैदिक तत्त्वज्ञान और वैदिक ज्ञान – विज्ञान को प्रकट करते है, इसलिए इनका भी समावेश वेदांग ग्रंथो में दिखाई देता है |

❖ महत्त्व आणि उपयोगिता :

- वेद यह सर्व प्राचीन तथा सर्व ज्ञानमय ग्रन्थ है | आज पढाए जाने वाले विविध विषयों के सन्दर्भ यदि वेदों में देखने हुए तो इस संशोधन के लिए वेदांग ग्रंथो का अध्ययन आवश्यक है |
- हमारी संस्कृति, सभ्यता और सदाचार आदि के हेतु वेदांगो के अध्ययन से प्राप्त होते है | इसलिए इनका अध्ययन महत्त्वपूर्ण है |
- विविध याग विधान, कर्म विधानों के विनियोग जानने के लिए यह उपयुक्त है |
- वेदों में वर्णित ज्ञान – विज्ञान की प्राप्ति करने के लिए इनका अध्ययन महत्त्वपूर्ण है |
- वेदांग ग्रन्थ वैदिक संकल्पनाओ को समझने में सहाय्यभूत है, जिस कारण हमारी गौरवशाली प्राचीन संस्कृति तथा परम्पराओं का पता चलता है |
- इसलिए वैदिक अध्यासक्रम में वेदांग विषयका अध्ययन महत्त्वपूर्ण एवं अत्यावश्यक है|

❖ शब्दार्थ :

- वेदांग : वेदों के अंग
- प्रातिशाख्य : वैदिक व्याकरण का विवेचन करनेवाला ग्रन्थ
- शिक्षा : वेदोच्चार, वेदपठन का विवेचन करनेवाले ग्रन्थ
- श्रौतसूत्र : वेदों में वर्णित श्रौत यागो का वर्णन करने वाले ग्रन्थ
- गृह्यसूत्र : गृह से संबंधित संस्कार एवं सदाचारो का वर्णन करनेवाले ग्रन्थ

❖ प्रश्नावली :

- वेदांग की परिभाषा स्पष्ट कीजिए |
- संस्कार तथा सदाचार से संबंधित वेदांग ग्रंथो का विवरण कीजिए |

- वेद मंत्रो के रक्षण हेतु कौनसे वेदांग ग्रंथो का अध्ययन किया जाता है ?
- वेदों को प्रतिबिंबित करने वाले ग्रन्थ कौनसे है ?
- वेदांग ग्रंथो की महत्ता एवं उपयोगिता क्या है ?

❖ आगे पढ़ने हेतु :

- शिक्षा ग्रन्थ – पाणिनीय शिक्षा, याज्ञवल्क्य शिक्षा
- आश्वलायन गृह्यसूत्र
- लगधस्य ज्योतिषम

****

JSDIVSR

MODULE 2

[I] पुराण

- ✓ परिचय
- ✓ पुराणों का अध्ययन
- ✓ पुराणों का वर्गीकरण
- ✓ पुराण लक्षण
- ✓ चिंतनीय बिंदू
- ✓ महत्त्व आणि उपयोगिता

❖ परिचय :

सामान्य जनता के लिए भारतीय संस्कृति और सभ्यता का प्रचार एवं प्रसार करनेवाले पुराण यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। ऐसा कहा जाता है कि पुराणों की दृष्टि ' **लोके वेद च** | ' है जिसका अर्थ लोक समाज और वेद दोनों के लिए है। पुराण की परिभाषा इस प्रकार की गयी हैं |

- **पुरा नवम भवति** | - प्राचीन होते हुए भी जो नित्य नूतन हैं | **[निरुक्त]**
- **यस्मात् पुरा ह्यनतिदं पुराणम् तेन तत्स्मृतम्** | - जो प्राचीन परम्पराओंकी कामना करते हैं, वे पुराण. **[वायुपुराण]**
- **ऋचः सामानि छंदांसि पुराणं यजुषा सह** |- (परमात्मा) इनसे ऋचा, साम, छंद , पुराण यह यजुर्वेद सह उत्पन्न हुएँ |. **[अथर्व. ११. ७. २४]**

❖ पुराणों का अध्ययन :

इतिहास और पुराण एक दूसरे के पूरक हैं।

आख्यनैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः |
पुराण संहितां चक्रे पुराणार्थ विशारदः ||
{ विष्णु.पु. ३.६.१५ }

भगवान व्यासजी ने ब्रह्मसंग्रहीत पुराणों की एक पुराण संहिता बनाई जिसमें मुख्य रूप से आख्यान , उपाख्यान, गाथा और कल्पशुद्धि शामिल हैं। इसलिए पुराणों का अध्ययन करते समय इन चार बातों पर विचार करना चाहिए।

- **आख्यान** : अर्थ या कथा प्रसंग जो वक्ता द्वारा स्वयं दृष्ट है।
- **उपाख्यान**: सुने हुए कथाका या पारंपरिक कथा का कथन।
- **गाथा**: वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद इनसे संबंधित पुराणों का भाग |
- **कल्पशुद्धी**: धर्मसूत्र, सदाचार, संस्कार, नीतिमूल्य इनसे संबंधित पौराणिक भाग |

❖ पुराणों का वर्गीकरण :

प्राचीन कालसे पुराणों की संख्या १८ मानी गयी हैं | पुराण साहित्यमे १८ महापुराणे आणि १८ उपपुराणों का समावेश होता हैं |

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्|
अनापलिंग कुस्कानि पुराणानि पृथक् पृथक् ||
{ देवी भागवत }

- **महापुराणे** : मत्स्य, मार्कंडेय, भागवत, भविष्य, ब्राह्म, ब्रह्मवैवर्त, ब्रह्माण्ड, वामन, विष्णू, वायू, वराह, अग्नि, नारद, पद्म, लिंग. गरुड, कूर्म, स्कंद.
- **उपपुराणे** : सनत्कुमार, नर्सिंह, नारदीय, शिव, दुर्वास, कपिला, मानव, औषनस, वरुण, कालिका, सांब, नंदिकेश्वर, सौर, पराशर, आदित्य, महेश्वर, महाभागवत, वसिष्ठ. [देवी भागवत]
- **गुणभेदानुसार वर्गीकरण** : सत्त्व, रज, तम इन गुणभेदोंके अनुसार पुराणोंका वर्गीकरण करते हैं , वह इस प्रकार से :

सात्त्विकेषु पुराणेषु माहात्म्यमधिकं हरेः |
राजसेषु च माहात्म्यमधिकं ब्रह्मणोविदुः |
तद्वदग्नेश्च् माहात्म्यं तामसेषु शिवस्यच ||
{ मत्स्यपुराण ५३. ६८ }

सात्त्विक पुराणों में हरी का , राजस पुराणों में ब्रह्मा का और तामस पुराणो में शिव का माहात्म्य दिखाई पड़ता हैं | इस प्रकार से १८ पुराणोंका वर्गीकरण :

- **सात्त्विक पुराण** : विष्णू, नारद, भागवत, गरुड, पद्म, वराह.
- **राजस पुराण** : ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कंडेय, भविष्य, वामन, ब्रह्म.
- **तामस पुराण**: मत्स्य, कूर्म, लिंग, वायु, स्कंद, अग्नि.

❖ पुराण लक्षण :

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वंतराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम् ॥

- **सर्ग** – पंचमहाभूत, इंद्रियगण, बुद्धि आदि तत्त्वोंकी उत्पत्ति का वर्णन,
- **प्रतिसर्ग** – ब्रह्मादि स्थावर में प्रलय तथा स्थिति का वर्णन
- **वंश** – सूर्यचंद्रादि वंश का परंपरागत वर्णन,
- **मन्वन्तर** – मनु, मनुपुत्र, देव, सप्तर्षि, इंद्र और तत्कालीन समाज और विभूतियों का वर्णन,
- **वंशानुचरित** – राजकीय, आर्थिक, नैतिक आणि ऐतिहासिक परिस्थिती एवं तत्कालीन व्यवस्था इत्यादी का सविस्तर वर्णन|

भागवत पुराण के **दस लक्षण** है, इसलिए उसे महापुराण भी कहा जाता है |

❖ चिंतनीय बिंदू:

१) **भूगोल, खगोल, ब्रह्माण्ड**:

भूर्लोकः कल्पितः पद्भ्यां भुवर्लोकोऽस्य नाभितः | हृदा स्वर्लोक उरसा महर्लोको महात्मनः |
ग्रीवायां जनलोकश्च तपोलोकः स्तनद्वयात् | मूर्धभिः सत्यलोकस्तु ब्रह्मलोकः सनातनः ||
{श्रीमद्भा. २.५ }

श्रीमद्भागवत महापुराणके प्रस्तुत श्लोक में विराट पुरुषका वर्णन किया गया हैं | इसमें भुर्लोक, भुवर्लोक,स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, सत्यलोक व सनातन ब्रह्मलोक ऐसा ब्रह्माण्ड का वर्णन आता हैं |

२) नीतिबोध आणि तत्त्वज्ञान :

स बन्धुर्यो हिते युक्तः स पिता यस्तु पोषकः |
तन्मित्रं यत्र विश्वासः स देशो यत्र जीव्यते ||
{गरुड पुराण १०८. १५ }

जो हितकारी है वही सच्चा बंधू है। जो भरण पोषण करता है वह पिता है। जिस पर भरोसा किया जा सकता है वही सच्चा मित्र है। जहाँ जीवन में ध्येयप्राप्ति मिले वही देश हैं।

३) पुराणे व विज्ञान:

मेरुमन्दर कैलास कुम्भ सिंह मृगास्तथा |
विमानच्छन्दकस्तद्वच चतुरस्त्रास तथैव च || .....
..... प्रसादा नामतः प्रोक्ता विभागं शृणुत द्विजाः ||
{ मत्स्यपुराण २६१. २८-२९-३० }

प्रस्तुत श्लोक में मेरू, मंदर, कैलास, कुंभ, सिंह, मृग, विमान, छंदक, चतुरस्त्र, अष्टास्त्र, षोडशास्त्र, वर्तुल, सर्वभद्रक, सिंहास्य, नंदन, नंदीवर्धन, हंस, वृष, सुवर्णेश, पद्मक और समुद्रक आदि विविध वस्तुओंके नाम दिए गए हैं | साथ ही आगे वाले श्लोको में उनकी रचना की प्रक्रिया को भी समझाया गया है। आज के स्थापत्य शास्त्र के साथ इसका सम्बन्ध दिखाई देता हैं |

४) भारतीय संस्कृती चा प्रचार व प्रसार :

येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबल:।
तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

भविष्यपुराण के अनुसार, इंद्राणी द्वारा बनाया गया रक्षासूत्र देवगुरु बृहस्पति ने इंद्र को बाँधा था और उस समय उन्होंने निम्नलिखित स्वस्तिवाचन का पाठ किया था। आज भी रक्षाबंधन के पर्व पर पारंपरिक रूप से राखी बांधते समय यह अभिष्ट मंत्र का पठन किया जाता है। अर्थात यह त्योहार पुराणों से आता है जो आज हमारी भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं।

❖ महत्त्व और उपयोगिता :

अन्यो न दृष्टः सुखदो हि मार्गो |
पुराणमार्गो हि सदा वरिष्ठः ||

- पुराणों का मार्ग बहुत आसान और सीधा है।
- **इतिहासपुराणाभ्यां वेद समुपबृंहयेत्।** : वेद गूढ़ और रहस्यमय है, इसलिए इतिहास और पुराणों की मदद से उनका उपबृंहण किया जाना चाहिए। (उपबृंहण : बृह् धातू - सिद्धांत को स्पष्ट करता हैं)
- विचारधारा, कर्मधारा, भावधारा मानव जीवन के तीन सबसे महत्वपूर्ण पैलु हैं जो जीवन को जीने लायक बनाती हैं। हमारे पुराणकारों ने सरल भाषा में इन तीन पैलुओं को समाज को समझाने के लिए पुराणों की रचना की।
- इसके अलावा, पुराणों ने हमारे दैनिक जीवन के साथ-साथ हमारे पारंपरिक शिष्टाचार, व्रत वैकल्य, उत्सव, संस्कार और परंपरागत कुल - गोत्र, कुल देवता, ग्राम देवता, वंशावली के महत्व को संरक्षित किया है।

- पुराणों का अध्ययन हमारे गौरवशाली इतिहास और परंपरा के विस्मरण को दूर करता है और इसलिए महत्वपूर्ण है।

यो विद्याच्चतुरो वेदान् साङ्गोपनिषदो द्विजः |
न चेत् पुराणं संविद्यान्नैव स स्याद् विचक्षणः ||

- वेदांग और उपनिषदों सहित सभी चारों वेदों का अध्ययन किया लेकिन पुराण साहित्य में अनभिज्ञ व्यक्ति को विद्वान नहीं कहा जा सकता।

❖ शब्दार्थ :

- लोके वेदे च : सामाजिक दृष्टी एवं आत्मज्ञान की दृष्टी |
- स्वस्तिवाचन : कल्याणकारी मंत्रों का पाठ |
- ब्रह्माण्ड : सप्त लोक और सप्त पाताल से बना |

❖ प्रश्नावली :

- पुराणोंकी व्याख्या क्या है ?
- पुराणोंका वर्गीकरण स्पष्ट कीजिए |
- पुराणों के प्रकार कौनसे है ?
- पुराणों के वैशिष्ट्य कौनसे
- पुराण के अध्ययन की आवश्यकता और महत्ता बताइए |

❖ आगे पढ़ने हेतु :

- पुराण अंक, गीताप्रेस, गोरखपुर
- विविध पुराण संहिताए, गीताप्रेस, गोरखपुर

.....

MODULE 2

[II] इतिहास

- ✓ परिचय
- ✓ अध्ययन हेतू
- ✓ रामायण परिचय एवं चिंतन
- ✓ महाभारत परिचय एवं चिंतन
- ✓ महत्व एवं उपयोगिता

❖ परिचय :

इति ह आस । : ऐसा हुआ, ऐसी इस शब्द की व्याख्या की जाती हैं और इसके अलावा पुरावृत्त या प्राचीन कथा ऐसा भी इसका अर्थ किया जाता हैं | इसके संदर्भ मे कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार दी जाती हैं:

- **इति हैवमासिदिति यः कथ्यते स इतिहासः | [दुर्गाचार्य नि. २.१०] :-**

ऐसा हुआ, इस प्रकार से जो बतलाया जाता हैं उसे इतिहास कहते हैं |

- **इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत् | [महर्षि व्यास] :-**

वेद ज्ञान का उपबृंहण(वृद्धी) करनेवाले ग्रंथ ये इतिहास और पुराण हैं |

- **धर्मार्थकाममोक्षाणां उपदेश समन्वितं|**
  पुरावृत्त कथायुक्तं इतिहासं प्रचक्षते ॥ [श्रीधर टिका]

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के उपदेश से युक्त एवं पुरावृत्त कथा से युक्त जो साहित्य हैं , उसे इतिहास कहते हैं |

JSDVSR

❖ अध्ययन हेतू :

मनुष्य इतिहास के केंद्र में है, क्योंकि सभी इतिहासादि व्यवहार मानव-प्रेरित, मानव-निर्मित और मानव-पुरस्कृत हैं। इतिहास ग्रंथों का मुख्य उद्देश्य एक उत्तम मनुष्य निर्मिती और मनुष्य को अभिष्ट कल्याण की प्राप्ति कराना है। इसका अध्ययन करते समय, दो मुख्य हेतु दिखाई देते हैं।

१) ऐतिहासिक ज्ञान :

इतिहास ग्रंथोका अध्ययन करते समय प्राचीन काल, समाज और उसका स्वरूप, भूगोल और कालक्रम, देशस्थिती और उसका परिणाम, विद्या और कलाका विकास, रीती रिवाज, पेहराव तथा संस्कृती का परिचय इन विषयों की जानकारी प्राप्त की जाती हैं|

२) स्वयं प्रेरणा व जिज्ञासा:

इसमें नीतिबोध, जिज्ञासापूर्ती, महापुरुषों के चरित्र से उत्साह वृद्धी और प्रेरणा प्राप्ती, अनुभव प्राप्ती और मार्गदर्शन, कल्पना शक्ती, स्मरण शक्ती और विचार शक्ती का विकास इ. विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इतिहास का अध्ययन किया जाता है।

❖ इतिहास ग्रंथ :

रामायण और महाभारत हमारे प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथ हैं। इनका सविस्तर विवरण निम्ननुसार हो सकता है।

(अ) रामायण :-

इस ग्रन्थ के कई संस्करण उपलब्ध हैं, लेकिन मूल रामायण महर्षि वाल्मीकि द्वारा लिखी गई है। इसमें २४,००० श्लोक, ७०० सर्ग, ७ कांड हैं और इसे आदिकाव्य और छन्दोबद्ध इतिहास भी कहा जाता है। इसमें विशेष रूप से इक्ष्वाकु वंश के पुरुषोत्तम श्रीराम का चरित्र और इससे संबंधित अन्य उप-कथाएँ भी देखी जा सकती है।

❖ चिंतनीय बिंदू :

१) प्रतिज्ञा पालन :

तुलसीदासजी का वचन हैं,

रघुकुल रीती सदा चलि आई , प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई|
{ रामचरितमानस ,अ. का .२८ }

प्रतिज्ञा पालन इस ग्रंथकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। केवल प्रतिज्ञा लेना महत्त्वपूर्ण नहीं बल्कि उसका पालन आदर्श निर्माण करता है | रामायण में कई कथाएँ हैं, जहाँ विभिन्न स्थितियों में ऐसी प्रतिज्ञाएँ देखी जाती हैं, जैसे लक्ष्मण की श्रीराम के साथ वनवास में जाने की प्रतिज्ञा, हनुमानजी की सीता माता की ख़ोज करने की प्रतिज्ञा आदि। यह विशेषता महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रतिज्ञा मन और बुद्धि का मेल कराती हैं, जो आजभी समाजमे अपना प्रभाव दिखाती है |

२) मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम :

आदर्श पुत्र, आज्ञाधारी शिष्य, उत्तम प्रशासक, कुशल संघटक और कर्तव्यदक्ष राजा ऐसी श्रीरामजी की विविध विशेषताएँ दिखाई देती हैं | रीती, मर्यादा और पुरुषार्थ इनका सुयोग्य मेल इसमें देखने को मिलता हैं, जो सनातन धर्म की स्थापना के लिए अनुकूल होता है | इसलिए केवल भारतवर्ष में ही नहीं तो सम्पूर्ण विश्वमें श्रीरामजी को और रामायण इस ग्रंथ को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ दिखाई देता है |

३) वनवासी समाज :

रामायण में विभिन्न जनजातियों का उल्लेख है जिनका भारतीय संस्कृति में अमूल्य योगदान है | जैसे, निषाद राज गुह, शबरी इ.

❖ रामायणका प्रभाव :

यह धार्मिक और नैतिक आदर्शों का इतिहास है । यह हमारी परंपराओं, धारणाओं, आकांक्षाओं, भाव-भावनाओं, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक गतिविधियों को दर्शाता है। भगवान श्रीराम यह सद्गुणों के सर्वोच्च प्रतीक हैं, जबकि रामायण जीवन के ध्येय का दर्शन कराता है | जब विदेशी आक्रमण हुएँ तब सामाजिक भावना और संगठन का केंद्र बिंदु तथा राष्ट्रीय पुनरुत्थान का उपास्य भी यह ग्रन्थ था । इतिहास की उदात्तता और मानवता को मार्गदर्शन करनेवाला एक महत्वपूर्ण ग्रंथ रामायण है।

(ब) महाभारत :-

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च पुरुषर्षभ
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्॥

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों के बारे में इस ग्रंथ में जो बताया गया है, वही सर्वत्र है। इसमें जो नहीं है वह कहीं नहीं है। इसके अलावा, विभिन्न विषयों जैसे तत्वज्ञान, व्यवहार, वंशावली, राजनीति आदि पर विस्तृत विवेचन इसमे दिखाई देता है । इसके एक लाख श्लोक और अठारह पर्व हैं, जिसके रचयिता महर्षि व्यास है। इसके पर्व इस प्रकार हैं : -

आदी, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण , कर्ण , शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शांती, अनुशासन, अश्वमेधीक , आश्रमवासिक, मौसल, महाप्रस्थानिक, स्वर्गारोहण.

❖ चिंतनीय बिंदू

१) सावित्री आख्यान :

सवितृ अर्थात सूर्य के आशिर्वाद से नि:पुत्र अश्वपति को प्राप्त हुई तेजस्वी पुत्री ही " सावित्री" है। अपने पति सत्यवान की मृत्यु से दुखी सावित्री के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपने ज्ञान और प्रतिभा के बल पर यम से अपने पति का जीवन वापस पा लिया तथा अपने दोनों कुलोंका उद्धार किया। इससे निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं।

- इतिहास में स्त्री पात्रों का योगदान और महत्व।

- यम सावित्री संवाद में, उनका बहुश्रुत व्यक्तित्व (वेदोपनिषद का ज्ञान) समाज में महिलाओं की शिक्षा के उच्च स्तर को दर्शाता है।

- पातिव्रत्य और धर्माचरण से सावित्रीने दोनों कुलोंका किया उद्धार, नारीशक्तिके अपरिमित सामर्थ्य को दर्शाता है |

महाभारत जैसे ऐतिहासिक ग्रंथ में ऐसी कई छोटी, रोचक और बोधप्रद अनेक कथाएँ दिखाई देती हैं।

२) धर्म आणि नीती :

महाभारत में धर्म और नैतिकता पर विभिन्न भाष्य हैं। आइए इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण देखें:

महाभारत में, उद्योग पर्व में भगवान श्रीकृष्ण दुर्योधन के पास शांति का प्रस्ताव ले जाते हैं। इस समय, दुर्योधन के भोजन के निमंत्रण को अस्वीकार करते हुए वे महात्मा विदुर के आतिथ्य और भोजन प्रस्ताव का स्वीकार करते है। इसका कारण देते हुए, भगवान श्रीकृष्ण दुर्योधन से कहते हैं,

संप्रीतिभोज्यान्यन्नानि आपद्भोज्यानि वा पुनः |
न च संप्रीयसे राजन् न चैवपद्गता वयम् ||
(महा. उद्योग पर्व, ९१. २५)

राजन, भोजन का प्रस्ताव दो स्थितियों में स्वीकार किया जाता है। एक जिससे आपको प्रीती हैं, ऐसे व्यक्ति के पास जाने पर और दूसरा आपात स्थिति में। आपको मुझसे कोई प्रेम भावना नहीं है और मैं आपात स्थिति में भी नहीं हूं। उद्योग पर्व के अंतर्गत आठ अध्यायोंकी विदुरनीति में इस श्लोक का समावेश हैं | धर्म, अध्यात्म, नीति आदि मनुष्योपयोगी विविध विषय इतिहास ग्रंथों में दिखाई देते है।

३) पूर्वजांविषयी अभिमान:

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके भविष्य को निर्धारित करता है। इतिहास न केवल भौगोलिक और सामाजिक परिस्थितियों को दिखाता है बल्कि हमारे मूल्यों पर आधारित

संस्कृति और परंपरा की प्रगल्भता को भी दर्शाता है। भारतीय इतिहास ग्रंथोंमे में भीष्म, द्रौपदी, सुदामा जैसे कई चरित्र यह साबित करते हैं। इसलिए, जिस तरह गुमराह करनेवाला इतिहास आत्म-विस्मृति की ओर ले जाता है, उसी तरह उन्नत और गौरवशाली इतिहास भविष्य की पीढ़ियों की अस्मिताको जागृत करता है। इसीलिए हमारे इतिहास ग्रंथ हमारे पूर्वजों के कर्तृत्त्व को दर्शाते है और हमारे स्वाभिमान का पोषण करते है।

❖ **महाभारतका प्रभाव** -

इसका उल्लेख दूसरी शताब्दी ईस्वी के बाद से ग्रीक साहित्य में दिखाई पड़ता है। छठी शताब्दी में कंबोडियन मंदिरों में इसका अध्ययन होता था। दसवीं शताब्दी में, जावा के लोगों ने महाभारत का अनुवाद किया। १८१९ में, फ्रांझ बॉप ने पहली बार इसमे प्रस्तुत नलोपाख्यान का रूपांतरण किया, जिसने दुनिया भर में प्रशंसा प्राप्त की। इसके स्त्री जीवन को आज भी दुनिया भर में सराहा जाता है। इस प्रकार महाभारत का पूरे विश्व पर प्रभाव दिखाई देता है।

❖ **महत्व एवं उपयोगिता** :-

- ये दोनों इतिहास जैसे **सांस्कृतिक विश्वकोश** की तरह हैं।
- जबकि रामायण ने जीवन के लिए एक ध्येयदर्शन निर्धारित किया, महाभारत ने मानव जीवन की अपूर्णता को महसूस करते हुए, एक कठिन परिस्थिति के अंधेरे के माध्यम से ध्येयसिद्धि का रास्ता दिखाया।
- **आश्वलायन गृह्यसूत्र** (४. ६. ६) कहते हैं की चित्त पे अच्छे संस्कार करनेवाले इतिहास ग्रंथ को मनुष्य ने अच्छी तरह से नित्य पढ़ना चाहिए।
- **कौटिल्य अर्थशास्त्र** (१.५, १०.१४, ५.६) कहता है कि इतिहास ग्रंथ का अध्ययन उस शिक्षा को पूरा करता है जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं को गलत मार्ग से बचाता है।

- इसलिए, इतिहास ग्रंथोंको न केवल कला और साहित्य की दृष्टी से बल्कि शास्त्र की दृष्टी से इनका अध्ययन करना चाहिए |

❖ शब्दार्थ :

- दुर्गाचार्य : निरुक्तकार |
- उपबृंहण : वृद्धी या विस्तारपूर्ण चिंतन |
- पुरावृत्त : प्राचीन कालसे सम्बन्ध रखनेवाली |
- काण्ड : प्रकरण |
- आश्वलायन गृह्यसूत्र : गृह संस्कार बतानेवाला सूत्र ग्रन्थ |

❖ प्रश्नावली :

- इतिहास की परिभाषा लिखिए |
- इतिहास के अध्ययन के मुख्य हेतु कौनसे है ?
- रामायण का संक्षिप्त विवरण कीजिए |
- महाभारत के वैशिष्ट्य कौनसे है ?
- प्रस्तुत भारतीय इतिहास ग्रंथो का महत्त्व लिखिए |
- प्रस्तुत भारतीय इतिहास ग्रंथो के अध्ययन की क्या आवश्यकता है ?

❖ आगे पढ़ने हेतु :

- वाल्मीकि रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर
- महाभारत, गीताप्रेस, गोरखपुर

****

JSDVSR

MODULE 3

[I] स्मृती

- ✓ परिचय
- ✓ अध्ययन
- ✓ वर्ण विवरण
- ✓ आश्रम व्यवस्था
- ✓ पुरुषार्थ
- ✓ संस्कृति में योगदान तथा कालसापेक्षता
- ✓ महत्त्व एवं उपयोगिता

❖ परिचय :

भारतमें वैदिक साहित्य में स्मृति ग्रंथों का विशेष स्थान है। हमारी परंपरा, संस्कृति और उसमे समाहित सदाचार का पालन करते समय जिन विधि नियमोंका पालन किया जाता है, उनका समावेश स्मृति ग्रंथो मे होता है | इसकी अनेक परिभाषाएँ देखने मिलती है | जैसे -

- **स्मृति - स्मर्** - जिसे ध्यानमे रखा जाएँ उसे स्मृति कहा जाता है | (Tradition that is remembered)
- **स्मृति: -** पौराणिक कथाओं के अनुसार इसे **धर्म और मेधा** की कन्या कहा जाता है।
- जिन ग्रंथों में आचार, व्यवहार और प्रायश्चित्त आदिका का वर्णन देखने मिले, उन्हेंभी स्मृति कहा जाता है।

❖ अध्ययन :

स्मृति ग्रंथों के अध्ययन में समाज और तत्संबंधित आचरण, व्यवहार, धर्म और इतिहास पर मुख्य रूप से विचार किया जाता है। स्मृति मतलब तत्कालीन सामाजिक स्थिति के अनुरूप बनाए गए कानूनी नियमों का परिशीलन हैं। प्राचीन प्राप्त स्मृतियोंका अध्ययन करते समय ऐसा प्रतीत होता है कि इनकी निर्मिती करते समय वर्ण, आश्रम और पुरुषार्थों पर आधारित समाजव्यवस्थाका भी विचार हुआ है | इसीलिए स्मृतिग्रंथोंका अध्ययन करते समय इन सभी संकल्पनाओंको समझना अत्यंत आवश्यक है |

- **चातुर्वर्ण्य संकल्पना :**

प्रस्तुत ग्रंथो मे वर्णव्यवस्थापर आधारित समाज पद्धती दिखाई देती है | जिसमें ब्राह्मण (अध्ययन-अध्यापन), क्षत्रिय (संरक्षण और प्रजा पालन), वैश्य (व्यवसाय और व्यापार) और शूद्र (सेवा) आदि चार प्रमुख वर्ण दिखाई देते है | यह जन्मपर नहीं तो गुण और कर्म के आधारपर स्थापित किए हुए दिखाई देते है |

चातुर्वण्यम मयासृष्टं गुण कर्म विभागशः|
{ श्रीमद्भगवद्गीता, महाभारत }

❖ आश्रम व्यवस्था :

भारतीय ऋषियों ने दूरदर्शिता के साथ मानव जीवन और इसकी उपयोगिता पर विचार किया और इसे चार आश्रमों में सुस्थापित किया। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास । इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:

- **ब्रह्मचर्याश्रम :**

इस आश्रमका जीवन के प्रारंभिक वर्षों में पालन किया जाता है। इनमें शक्ति संचय, संयम, शिक्षा, स्वास्थ्य, तेज, बल, स्फूर्ति, तपस्या, सेवा आदि की प्राप्ति द्वारा शरीर, मन और बुद्धि का समग्र विकास किया जाता है।

- **गृहस्थाश्रम :**

गृहस्थ संचालन करते समय इस संसाररूपी उद्यानमें परिश्रम, पुरुषार्थ, व्यस्तता एवं परस्पर सहयोग के माध्यम से युवराज की तरह आनंद लेना और जीवन में सरसता का अनुभव लेना ही गृहस्थाश्रम कहलाता है | इस द्वितीय आश्रम में प्राप्त शिक्षा, ज्ञान, स्वास्थ्य और अनुभव से उत्तम जीवन को प्राप्त किया जाता है | संयम, सदाचार, नैतिकता और पवित्रता इस आश्रम के मुख्य आधारस्तम्भ हैं।

- **वानप्रस्थ आश्रम :**

इसमें जीवन को लोक कल्याण, जनहित और परोपकार आदि में जिया जाता है। इसमें ब्रह्मचर्य पूर्वक विचरण अभिप्रेत है। वानप्रस्थ आश्रम में, मनुष्य का आत्मसंबंध विस्तृत होते हुए अखंड देशप्रेम, समाज सेवा, राष्ट्र भक्ति आदिद्वारा आत्म-बल, साहस, सहिष्णुता, समानता, उदारता और शक्तिपुरुषार्थ के माध्यम से विश्वकल्याण की भावना निर्मित होना अपेक्षित होता है |

- **संन्यास आश्रम :**

इस आश्रम में मनुष्य की व्याप्ति और विचार प्रगल्भता की चरम अवस्थापर पहुंचते है | इस आश्रम मे जीवन सेवा, परमार्थ एवं कल्याण से परिपूर्ण होता है | यह आश्रमवासी याने सन्यासी स्वयम्की शारीरिक आवश्यकताएँ, सुख-दुःख आदि की चिंता ना करते निरंतर जनहित और जनसेवा में लगा रहता है | समस्त भूतमात्रोमे (चराचरमे) होने वाली ईश्वरीय तत्त्वकी अनूभूति, निरंतर उसका सामर्थ्य, शांती, समाधान और प्रतिभा को विकसित करता है और उसके जीवन को परिपूर्णता प्रदान करता है |

❖ **चार पुरुषार्थ:**

पुरुशैर्यथे इति पुरुषार्थः | - जीवन का लक्ष्य या उद्दिष्ट साध्य करने हेतु, जो प्राप्त करना आवश्यक होता है, उसे पुरुषार्थ कहते हैं। वेदों को अभिप्रेत पुरुषार्थ चतुष्टय इस प्रकार है:

- **धर्म** : - मानव जीवन का विकास एवं कल्याण साध्य करानेवाला तत्त्व |

- **अर्थ** : - **मनुष्याणां वृत्तिः अर्थः** | (कौटिल्य अर्थशास्त्र) – मनुष्यके भौतिक जीवन से संबंधित विचार और क्रियाएं यहां अर्थ कहलाती हैं।
- **काम** : - जीवन लक्ष्य के लिए काम आदि को अपनाना।
- **मोक्ष** : - सुख - दुःख से परे जाकर आनंद की अनुभूति प्राप्त करना |

❖ स्मृतीग्रंथो का वर्गीकरण :

स्मृति ग्रंथ धर्म और विधी विषयक सिद्धांतों का एक विशाल भंडार है। याज्ञवल्क्य ने पहले विभिन्न स्मृति ग्रंथों के बारे में एक साथ जानकारी दी | उसके बाद भी कई स्मृति ग्रंथ लिखे गए। इनमें से कुछ ग्रंथ इस प्रकार हैं :

मनू, याज्ञवल्क्य, अत्री, विष्णू, हारीत, औषनस, अंगिरा, यम, कात्यायन, बृहस्पती, व्यास, पराशर, दक्ष, गौतम, वशिष्ठ, आपस्तंभ, संवर्त, शंख, देवल, शतातप आदि

याशिवायही नंतरच्या काळात वृद्ध, बृहत व लघु हि उपपदे पूर्वीच्याच स्मृती ग्रंथांना जोडून त्यांचा विस्तार केलेला दिसून येतो. जसे वृद्ध याज्ञवल्क्य स्मृती, वृद्ध गार्ग्य स्मृती,वृद्ध मनुस्मृती|

❖ चिंतनीय बिंदू :

१) स्मृतियो में आनेवाले विषय :

स्मृतिग्रंथो में विवाह, वर्णाश्रम, राजविषयक, आपद्धर्म, दत्तक पुत्र, धन विषयक, दायभाग, स्त्रीधन, कानून - न्याय, दंड, न्यायाधीश और निर्णय, कर, सीमा निर्णय आदि विभिन्न विषयों के विवरण दिखाई देते हैं।

२) स्मृति ग्रंथोकी कालसापेक्षता :

जिस प्रकार विधेयको में घटना दुरुस्ती या यथोचित बदलाव दिखाई देते है, ठीक उसी प्रकार स्मृति नियमो मे भी कालानुरूप परिवर्तन दिखाई देता है और उसीके परिणामस्वरूप

हमें अनेक स्मृतियों की निर्मिती और अधिक संख्या दिखाई देती है | यद्यपि इसमे बदलाव किए गए, इसलिए इस ग्रंथको पूर्णतः दुर्लक्षित करना उचित नहीं | इसी कारण आजभी स्मृति ग्रंथो का परिशीलन किया जाता है |

३) स्मृति ग्रंथोका हेतु :

समाज का उत्कर्ष एवं संस्कृति का जतन यह स्मृति ग्रंथो के प्रधान उद्दिष्ट दिखाई देते है | इसके अलावा समाजव्यवस्था मे सम्मिलित हरेक घटक का कर्तव्याकर्तव्य, उसके कल्याण की नीति आदिका विचार भी इन ग्रंथो मे देखने मिलता है, जो स्मृतिकारों के, समाज के उस हरेक व्यक्तिकी आत्मिक एवं भौतिक अभ्युदय की कामना और व्यवस्था का दर्शन करा देता है |

४) भारतीय संस्कृती में योगदान :

आजतक भारतवर्ष पर अनेक विदेशियोने आक्रमण किए और यहा की समृद्ध एवं सम्पन्न संस्कृति पर अपना प्रभाव डालने का प्रयत्न किया, किन्तु इस विपरीत परिस्थिति मे भी हमारी सामाजिक परम्पराओंका रक्षण करते हुए भारतीय संस्कृतिका महत्त्व अबाधित रखनेका महत्त्वपूर्ण कार्य इन ग्रंथोने और ग्रंथाकारोने किया |

❖ महत्त्व एवं उपयोगिता :

- जैसे इतिहास और पुराण वैसेही स्मृति ग्रन्थ और धर्मशास्त्र यह परस्पर पूरक है | स्मृति ग्रन्थ यह तत्कालीन परिस्थितिमे लिए हुए निर्णयों को दर्शाते है, तथा धर्मशास्त्र यह उसी नियमोंको आजकी परिस्थितिमे लागू करनेका विवेक समाजमे जागृत करते है |

- अपनी प्राचीन परंपरा और संस्कृति को ध्यानमे रखते हुए सामाजिक व्यवस्थाकी निर्मिती करना यह स्मृतिकारोंका मुख्य कार्य था | " समाजकी उन्नति, व्यक्तिकी उन्नति ", यह सूत्र स्मृतिकारोने जान लिया था और इसीके आधारपर नीति – नियमोंकी निर्मिती और शास्त्रीय दृष्टिकोनसे उसकी व्याप्ति हमें इन ग्रंथोके अध्ययनमे देखने मिलती है |

- भारतवर्षका इतिहास यह स्पष्ट करता है की यहापर अनेक विदेशियोने आक्रमण किए तथा यहाकी सामाजिक, आर्थिक, वैचारिक और राजकीय क्षेत्रोको अपने स्वार्थ और लाभके अनुसार प्रभावित करनेका प्रयास किया, जिस कारण यह सभी क्षेत्रोकी अवस्था गंभीर हुई किन्तु यह स्मृती ग्रन्थ ही थे जिन्होंने हमारी परंपरागत मूल धारणाओंका मर्म सुरक्षित रखा |

- विपरीत अवस्थामे भी स्मृतियोमे विषद नियमो को आत्मसात करते हुए, जहा आवश्यक है वहा कालोचित परिवर्तन करते हुए हमारी संस्कृति एवं उसकी प्रतिष्ठा सुरक्षित रखने का काम स्मृतिकारोने किया | विधि के दृष्टिसे विचार करने पर ऐसा कह सकते है की आजका संविधान भी आजकी स्मृति ही है जिसका भी उद्दिष्ट भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओका जतन और संवर्धन करना ही है |

❖ शब्दार्थ :

- परिशीलन : सभी दृष्टिसे परखा हुआ
- पुरुषार्थ : जीव को जीवन का अर्थ प्राप्त कराने वाले
- कालसापेक्षता : काल के अनुरूप पुर्तता
- मर्म : धारणाए स्विकारानेका मूल हेतु
- संवर्धन : सम्यक वर्धन, कल्याणकारी वृद्धि

❖ प्रश्नावली :

- स्मृतियों की परिभाषा स्पष्ट कीजिए |
- वर्ण और पुरुषार्थ किसे कहा जाता है ?
- चार आश्रम कौनसे ? उसका महत्त्व क्या है ?
- स्मृतियों के प्रकार और आधार कौनसे है ?
- भारतीय संस्कृति मे स्मृति ग्रंथोका क्या योगदान है ?
- स्मृति ग्रंथोके अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व स्पष्ट कीजिए |

❖ आगे पढ़ने हेतु :

- स्मृति ग्रन्थ, शंकर अभ्यंकर
- अष्टादशस्मृतयः, क्षेमराज श्रीकृष्णदास

****

JSDIVSR

MODULE 3

[II] धर्मशास्त्र

- ✓ परिचय
- ✓ अध्ययन
- ✓ वैदिक धर्म
- ✓ धर्म एवं पंथ
- ✓ धर्मपुरुष और धर्मावतार
- ✓ महत्त्व एवं उपयोगिता

❖ परिचय :

धर्माधर्म तथा कर्तव्याकर्तव्य के बीच न्याय करने के विज्ञान को धर्मशास्त्र कहा जाता है। धर्मशास्त्र के बारे में जानने से पहले धर्म की परिभाषा को समझना महत्वपूर्ण है।

- **येतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धी स धर्मः | [वैशेषिक सु. १. १. २]**

जिसके द्वारा अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों प्राप्त होते हैं, वह धर्म है।

- **धारणात् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः |**
  यः स्याद्धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः || [म. भा १०९. ११]

जो धारण किया जाता है उसे धर्म कहते हैं। धर्म प्रजा को धारण करता है। इसलिए, जो धारणसंयुक्त होता है, उसे निश्चित रूप से धर्म जानना चाहिए।

- **स एव धर्मः सोऽधर्मो देशकाले प्रतिष्ठितः।**
  आदानमनृतं हिंसा धर्मो ह्यवस्थिकः स्मृतः ॥ [म. भा. ३६. ११]

जो योग्य समय और योग्य जगह पर धर्म कहलाता है वह अयोग्य समय और अयोग्य जगह पर अधर्म कहलाता है। चौर्य कर्म, असत्य भाषण, हिंसा के बारे में ऐसा ही है। इसलिए, स्थिति के अनुसार उचित विवेक यही धर्म है।

❖ अध्ययन :

धर्मशास्त्र का अध्ययन करते समय स्थान, समय और परिस्थितियों का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। भारतीय धर्मशास्त्रों में अधिकारों की तुलना में कर्तव्य पर अधिक जोर दिया गया है। कई बार, लोगों को अपने मूल अधिकारों के लिए लड़ते देखा जाता है, लेकिन उन्हें उनके द्वारा दिए गए कर्तव्यों को पूरा करते हुए नहीं देखा जाता है। लेकिन यहाँ , धर्मशास्त्र कर्तव्य को धर्म मानता है और अधिकार उत्तम कर्त्तव्य कुशलतासे प्राप्त होते है |

धर्मशास्त्र के अध्ययन में धर्म और नीती का सामान्य और विशेष संबंध मानते हुए अभ्यासपूर्वक निर्णय लेने की प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण होती है | आइए इसका एक उदाहरण देखें :

सत्यं वद। : - सत्य बोले, यह है सामान्य धर्म | किन्तु प्राप्त परिस्थितिमे इस नियम को लागू करते समय क्या करना है? तो उसकी नीति ऐसी बताई जाती है,

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात् सत्यं अप्रियम्। प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः ||

:- सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए। सत्य परंतु अप्रिय नहीं बोलना चाहिए और प्रिय परंतु असत्य नहीं बोलना चाहिए, यही सनातन धर्म है।

❖ चिंतनीय बिंदू:

१) **वैदिक धर्म** : -

वैदिक धर्म किसीभी प्रकारके विशिष्ट मतों का समूह नहीं है बल्कि यह एक जीवन पद्धती है। आपको किसी को खाने, पीने, चैन करने के लिए कहने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। लेकिन मनुष्य की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति का नियमन करते हुए उसे कल्याणकारी मार्ग दिखाना यह धर्मशास्त्र की प्रवृत्ति है |

२) **धर्म आणि पंथ :-**

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, कल्याणकारी ध्येय की प्राप्ति हेतु जिस नैतिक, सामाजिक आदि मुल्योकी अवधारणा की जाती है, उन सभीका धर्म में समावेश होता है | जैसे कुलधर्म, ग्रामधर्म, राष्ट्रधर्म, मित्रधर्म इतनाही नहीं बल्कि शत्रु के साथ कैसा बर्ताव होना चाहिए, यह सिखानेवाला शत्रुधर्म भी है | फिर आज सम्बोधित किए जानेवाले धर्म को धर्म कहा जाना चाहिए?

यदि यह कहा जाए कि धर्म एकही है और सनातन (पूर्वापार नित्य नूतन), अर्थात किसी भी मनुष्य द्वारा नहीं बनाया गया है, तो इसकी उत्पत्ति कैसे हुई ? तो इतिहास के संदर्भ के अनुसार, उपरोक्त सभी तथा जैन, बौद्ध आदि सभी की उत्पत्ति उस समय के महापुरुषोंद्वारा यानि भगवान महावीर, बुद्ध, ईसा, पैगंबर द्वारा हुई, ऐसा दिखाई देता है |

"येन विश्वमिदं नित्यं धृतं चैव सुरक्षितम् । सनातनोऽक्षरो यस्तु तस्मै धर्माय वै नमः॥"

यदि धर्म के लक्षणों का अध्ययन करे तो धर्म यह सनातन होता है | इसीलिए इन महापुरुषों द्वारा स्थापित सिद्धांत और तदनुरूप आचार, विचार यह पंथ कहा जाता है । पंथ याने मार्ग । इस मार्ग या पंथ का अनुसरण करने वाले अनुयायियों को पंथानुगामी कहा जाता है । संक्षेप में, सभी पंथ यह मनुष्य कल्याण के लिए वरदायी ऐसे एक ही धर्म के विभिन्न रूप हैं |

५) धर्म पुरुष :- (धरति लोकान धियते पुण्यात्मभिः इति वा)

- जो लोगों को धारण करता है या जो पुण्यात्मा लोगोंके द्वारा धारण किया जाता है वह धर्म पुरुष है।

आयुःप्राणधनादिसर्वविषयो विद्युन्निभश्चञ्चलः संसारे परिवर्तिनि ध्रुवमिदं किंचिच्च नाचञ्चलम् ।
धर्मः केवलमेव निश्चलपदं प्राप्नोति मृत्युञ्जयः तस्मात् संततमेकनिष्ठमनसा सेवस्व धर्मामृतम् ॥

भावार्थ:

इस संसार में कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं है जो नित्य, ध्रुव या अविनाशी बना रहे । निश्चल और सदा स्थिर रहनेवाला कोई तत्त्व है तो वो कालजयी धर्म ही है | इसीलिए एक

बुद्धिमान व्यक्ति को हमेशा एकानिष्ठतासे और सच्चे मन से अमृत रुपी धर्म का सेवन करना चाहिए, उसका निरंतर अभ्यास एवं तदनुसार आचरण करना चाहिए |

इस प्रकार जो धर्मामृत को प्राप्त करता है वह स्वयं धर्मपुरुष बन जाता है। इसके दो प्रसिद्ध उदाहरण हमें इतिहास में मिलते हैं।

१) **यमधर्मराज** : मृत्यु देवता 'यम' |

२) **राजा युधिष्ठीर**: महाभारत में, पांडवों के सबसे बड़े भाई जिन्हें धर्मराज युधिष्ठिर कहा जाता है।

❖ महत्त्व एवं उपयोगिता :

- स्मृतियों में विधि, निषेध, तत्कालीन कानून आदि का पता चलता है, किन्तु आजकी प्राप्त परिस्थिति मे, प्राप्त साधनोमे कालके अनुसार उसी नियन का पालन किस परिवर्तन के साथ करे, यह जानने के लिए धर्मशास्त्र का अध्ययन आवश्यक है |

- पंथ, सम्प्रदाय, जमाती, जीवनपद्धती आदि विविध प्रकारोमे धर्म दिखाई देता है लेकिन परम्परागत धर्म तत्त्व यह सर्वव्यापी, एक और सनातन है, इन सभी में एकता की अनुभूति लेनी हो तो इस शास्त्र का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है |

- केवल ऋग्वेद में धर्म शब्द ५६ बार दिखाई देता है, याने वेद भी धर्म के सैद्धांतिक आधार की पुष्टि करते है, इसलिए वैदिक साहित्यके अभ्यास में धर्म का तत्त्व जानना आवश्यक है |

- ब्रह्माण्ड के हरेक प्राणी, वस्तु, ग्रह, धातु, पदार्थ आदियों के कुछ ना कुछ गुण और धर्म है, तो क्या धर्म से रहित कुछ है, इसका समाधान पाने के लिए शास्त्रोक्त रूपसे धर्म को जानना आवश्यक है |

❖ शब्दार्थ :

- अभ्युदय : विकास |
- निःश्रेयस : कल्याण |
- सनातन : नित्य नूतन |
- अक्षर : अविनाशी |
- पंथानुगामी : पंथ का अनुगमन करनेवाले |

❖ प्रश्नावली :

- धर्म की परिभाषा क्या है ?
- वैदिक धर्म किसे कहा जाता है ?
- धर्म पहले है या वेद ?
- धर्म का सनातन रूप स्पष्ट कीजिए |
- धर्मशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता विषद कीजिए |

❖ आगे पढ़ने हेतु :

- धर्मशास्त्रांक, गीताप्रेस, गोरखपुर
- History of Dharmashastra, P. V. Kane

****

JSDIVSR

MODULE 4

[I] दर्शन शास्त्र

- ✓ परिचय
- ✓ पाश्चात्य तत्त्वज्ञान व्याख्या
- ✓ भारतीय प्राचीन दर्शन की व्याख्या
- ✓ अध्ययन हेतु
- ✓ छह दर्शन विवरण
- ✓ महत्त्व एवं उपयोगिता

❖ परिचय :

दर्शन को तत्त्वज्ञान भी कहा जाता है | आज के काल मे दर्शन के अध्ययन में भारतीय और पाश्चात्य, ऐसे दो विभागोंका अभ्यास किया जाता है | किन्तु दर्शन और तत्त्वज्ञान यह दो शब्द दो अलग धारणाओं को व्यक्त करते है | यह भेद समझाने के लिए सर्वप्रथम पाश्चात्य तत्त्वज्ञानकी प्रचलित परिभाषा देखे,

❖ पाश्चात्य तत्त्वज्ञान

Philosophy is the study of general and fundamental questions about existence, knowledge, values, reasons, mind and language. The term was probably coined by Pythagoras.

'Philos'= **प्रेम** और 'Sofia' = **विद्या** , अर्थात Philosophy = **विद्याविषय में प्रेम**

उपरोक्त परिभाषा के अनुसार, पाश्चात्य तत्त्वज्ञानी किसी भी पदार्थ, उसकी उत्पत्ति आदि का शास्त्रीय दृष्टिकोन से अध्ययन करते हैं, और जीवन के कल्याण के लिए विविध प्रयोगों के माध्यम से विषय और पदार्थ में परिवर्तन लाते हैं। दूसरी ओर, भारतीय दर्शन इस शास्त्रीय दृष्टी के परे सोचकर जीवन के कल्याण के लिए स्वयं में परिवर्तन लाते है और इस प्रक्रिया को विज्ञान कहते है।

इसलिए उपनिषद कहते है,

आत्मा वा अरे दृष्टव्य: श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेय्यात्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्॥

उस आत्मा काही दर्शन, श्रवण, मनन, निदिध्यासन (निरंतर ध्यान) करना चाहिए, कारण आत्मा के दर्शन, श्रवण, मनन तथा विज्ञान से ही सब कुछ जाना जाता है |

❖ दर्शन :-

दृष्यते हि अनेन इति दर्शनम् ।

भारतीय दर्शन, उपरोक्त परिभाषा के अनुसार, विषय और पदार्थो को वैज्ञानिक दृष्टिकोन से जानते समय स्वयं में परिवर्तन लाकर जीव और जीवनका कल्याणकारी मार्ग तथा उसका ध्येय निश्चित करता है | संक्षेप में, प्राप्त परिस्थिती में स्वयं का परम कल्याण साध्य करने वाला वैचारिक परिवर्तन अथवा दृष्टिकोन यह दर्शन कहलाता है |

❖ अध्ययन हेतू :

दर्शन शास्त्र का प्राथमिक अध्ययन करते समय इसके दो प्रमुख उद्दिष्ट दिखाई देते है |

१) वैज्ञानिक संशोधन :

इसमें विभिन्न विषयों, उनकी उत्पत्ति, उनका मूल, उनके कारण आदि का तर्क और बुद्धि द्वारा प्रतिपादन किया जाता है। उसी तरह, खंडन – मांडनादी द्वारा विषय वस्तु के यथार्थ एवं सत्य स्वरूप की खोज की जाती है |

२) जीवन तत्त्वज्ञान :

इसमें वैज्ञानिक अवधारणाओं से परे जाकर, मानव जीवन के परिवर्तन के माध्यम से जीव और जगत दोनों के कल्याण को साध्य करने का मार्ग एवं हेतु (जीवन जीने की कला) प्राप्त किया जाता है।

❖ विविध दर्शन :

भारतीय परंपरा में, छह प्रमुख दर्शनों को तर्कों के मानक के रूप में माना जाता है, जिसमें **वेदांत, मीमांसा, सांख्य, योग्य, न्याय** और **वैशेषिक** आदिका समावेश होता हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार दिया जा सकता है।

१) न्याय :

इसके प्रवर्तक **गौतम ऋषि** हैं और इसे तर्क का शास्त्र भी कहा जाता है। इसके **पाँच अध्याय**, प्रत्येक में दो आन्हिक और **५३८ सूत्र** हैं।

'नीयते प्राप्यते विवक्षितार्थ सिद्धिरनेन इति न्यायः'|

जिसकेद्वारा किसीभी प्रतिपाद्य विषयकी सिद्धि की जाएँ अथवा जिसकी सहाय्यता से निश्चित सिद्धांत माना जाएँ, वह न्याय कहलाता है | इसमे चार प्रमुख बाते दिखाई देती है |

- सामान्य ज्ञान, उसकी समस्याए तथा समाधान
- सृष्टी के रहस्य का विवरण
- जीवात्मा एवं मुक्ती

- परमात्मा और उसका ज्ञान

उपरोक्त समस्याओं का समाधान करने के लिए, न्याय दर्शन में १६ पदार्थ माने जाते है। इस दर्शन के अनुसार, प्रमाण आदि के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करके संशय विरहित होना, याने मुक्ति है। इसे **आन्विक्षिकी शास्त्र** भी कहा जाता है।

२) वैशेषिक :

इसके प्रवर्तक **महर्षि कणाद** हैं। इस दर्शन में **१० अध्याय** हैं, प्रत्येक अध्याय में दो आन्हिक और **३७० सूत्र** हैं।

" विशेषं पदार्थं अधिकृत्य कृतं सत्र वैशेषिकम् | "

विशेष (पृथिव्यादि परम सूक्ष्म भूततत्त्व) नामक पदार्थोंको मूल मानकर प्रवृत्त होनेवाला शास्त्र वैशेषिक कहलाता है|

इसमें छह पदार्थ,नौ द्रव्य,२४ गुण ,पाच कर्म आदि विषयोंका विवेचन दिखाई देता है| इसके अलावा परमाणुवाद, अनेकात्मवाद, असत्कार्य वाद, परमाणुनित्यता वाद, सृष्टिवाद, मोक्षवाद आदि विविध सिद्धांत इस दर्शन में बताए जाते है |

३) सांख्य :

कपिल मुनि इस दर्शन के प्रवर्तक हैं। इसके **छह अध्याय** और **४७१ सूत्र** हैं। इस दर्शन का उद्देश्य प्रकृति और पुरुषों की व्याख्या करके उनका विवरण और गुणावलोकन दर्शाना है |

संख्या इस शब्दसे 'सांख्य' की व्युत्पत्ती होती है | संख्या - सम्यक् ख्यानम् अर्थात सम्यक विचार ऐसी भी इसकी परिभाषा बताई जाती है | जब मनुष्य अपनी विवेक द्वारा यह जानता है कि पुरुष (आत्मा और आत्मा) प्रकृति से भिन्न है, तो वह मोक्ष को प्राप्त करता है, ऐसा यह दर्शन कहता है । सांख्य दर्शन प्रकृती, महत्तत्त्व, अहंकार, पंचतन्मात्रा, एकादश इंद्रिय, पंचमहाभूत और पुरुष आदि २५ तत्त्वोंको मानता है | इसके अलावा,

- सत्त्व, रज, तम इन तीन गुणों की साम्यावस्था है प्रकृति |
- प्रकृती भोग्या और पुरुष भोक्ता होकर इनके संयोग से सृष्टिनिर्मिति होती है |

- अध्यात्मिक, अधिभौतिक और आधिदैविक इन त्रितापों से निवृत्ती |
- मुक्ति के प्रकार - जीवन मुक्ती एवं विदेह मुक्ती |
- मुक्ति के साधन आदि विषयोंका विवेचन इस दर्शनमें दिखाई देता है |

४) योग :

इसके प्रवर्तक **पतंजलि ऋषि** हैं। इसके **चार पाद** और **१९४ सूत्र** हैं। योग शब्द कई अर्थों में आता है। योग दर्शन में, योग शब्द की व्याख्या **युजिर् योगे** और **युज् समाधौ** ऐसे की गई है। इसका अर्थ है जोड़ना या प्राप्त करना।

जिस प्रकार चिकित्सा शास्त्र में **रोग, रोग हेतू, आरोग्य और औषधि** आदि चार व्यूह हैं, वैसे ही योग शास्त्र में **संसार, संसार हेतू, मोक्ष और मोक्षोपाय** आदि चार व्यूह माने जाते है | दुःखमय संसार हेय है | प्रकृती का संयोग दुःखमय संसाराका हेतू है | प्रकृती के संयोग की आत्यंतिक निवृत्ती ही मोक्ष है और सम्यक दर्शन यह उसका उपाय है |

योगके आठ अंग :

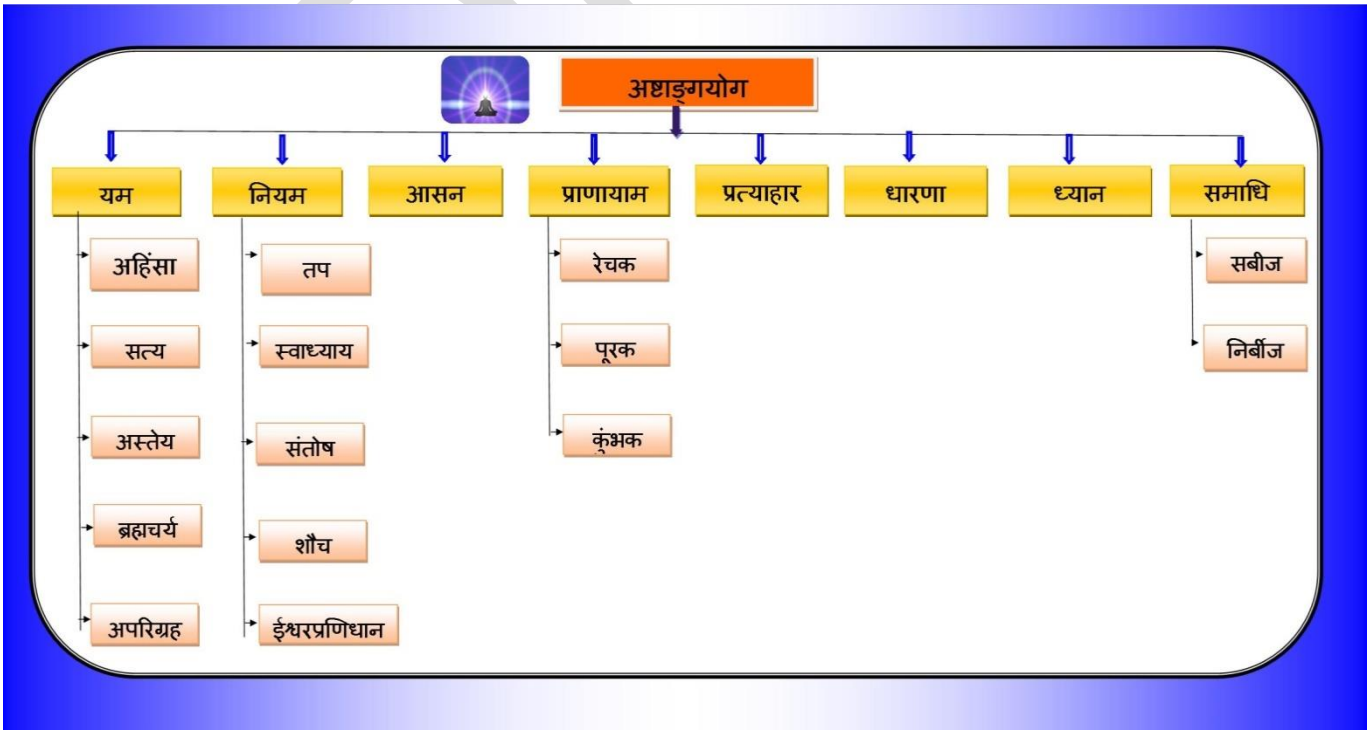

५) मीमांसा :

इसके प्रवर्तक **महर्षि जैमिनी** हैं। इस दर्शन में **१२ अध्याय**, **६० पाद, २७३१ सूत्र** हैं। यह दर्शन आकार में सबसे बड़ा दर्शन है। धर्म और वेदार्थ के विषयक विचार को मीमांसा कहा जाता है। इस दर्शन में, यागोंकी दार्शनिक रूप से परिभाषा कि गयी है। तथा धर्म इस दर्शन का मुख्य विषय है। इसलिए यह **"अथातो धर्मजिज्ञासा ॥"** इस सूत्र से प्रारम्भ होता है। मीमांसा दर्शन के तीन मुख्य विभाग हैं।

- ज्ञानोपलब्धीके साधन - प्रत्यक्ष , अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि.
- अध्यात्म विवेचन
- कर्तव्याकर्तव्य निर्णय

६) वेदांत :

वेदांत को उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है। बद्रीनारायण व्यास इस दर्शन के प्रवर्तक हैं। इसमें **चार अध्याय, ५५५ सूत्र, १९२ अधिकरण** और **१६ पाद** सम्मिलित हैं। वेदस्य अंतः, अंतिमो भाग: इति वेदांत: । वेदोंके अंतिम भाग (उपनिषद) वेदांत कहलाते है |

उपनिषद वेदों के अंतिम सिद्धांत को प्रकट करते हैं। यह दर्शन उपनिषदों के इस ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिए बनाया गया। इसीलिए वेदांत दर्शनको **भारतीय अध्यात्मशास्त्रका मुकुटमणि** माना जाता है | इसमें प्रमुख तीन विषयोंका विवेचन आता है |

- ब्रह्म
- जीव
- प्रकृती

७) अन्य दर्शन :

इसके अलावा चार्वाक, बौद्ध, जैन के साथ-साथ सॉक्रेटिस, प्लेटो, कांट ऐसे कुछ अन्य प्रसिद्ध भारतीय और पश्चिमी दर्शन हैं। आधुनिक भारत में श्री अरविंद, म.गांधी, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, स्वामी विवेकानंद आदि दर्शन शास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान हुए है।

❖ महत्त्व एवं उपयोगिता :

- दर्शन और तत्त्वज्ञान यह दो अलग धारणाए है | तथा तत्त्वज्ञान यह दर्शन का एक भाग है, यह सनाझाने के लिए दर्शन का अध्ययन आवश्यक है |
- पाश्चात्त्य तत्त्वज्ञान केवल बाह्य (पदार्थ) परिवर्तन साध्य कराता है जिससे भौतिक विकास साध्य होता है, किन्तु भारतीय दर्शन यह स्वयं परिवर्तन को प्राधान्य देता है, जिसमे आत्मिक कल्याण एवं भौतिक उन्नति दोनों साध्य की जाती है |
- इसके अध्ययनसे हमें सभी पदार्थ और जीवोकी ओर देखनेकी शास्त्रीय दृष्टि, वैज्ञानिक दृष्टिकोन और उनके वास्तविक मूल स्वरूपका दर्शन प्राप्त होता है |
- हमारी परम्पराके अनुसार ज्ञान सर्वत्र और सभी में है | दर्शन का अध्ययन हमें उस ज्ञानतक पहुंचनेकी वैज्ञानिक दृष्टी देता है | अतः ज्ञान – विज्ञान की प्राप्ति के लिए इसका अध्ययन आवश्यक है |
- दर्शन शास्त्र भौतिक दृष्टिसे संशोधन एवं अनुभव को प्रगल्भ करता है |
- केवल भौतिक ही नहीं, बल्कि स्वयं के चिंतनसे वह आत्मसंशोधन एवं आत्मानुभूती के मार्ग भी दर्शाता है, जो आत्मकल्याण का साधन बनते है |

❖ शब्दार्थ :

- तत्त्वज्ञान : तत्त्व की चर्चा करने वाला
- दर्शन : तत्त्व की अनुभूति कराने वाला
- खंडन-मंडान : शास्त्रार्थमे होनेवाला वाद – प्रतिवाद
- निदिध्यासन : निरंतर ध्यान
- आन्विक्षिकी शास्त्र : न्यायशास्त्र का नाम
- आन्हिक : यहाँ प्रकरण

❖ प्रश्नावली :

- दर्शन की परिभाषा स्पष्ट कीजिए |
- तत्वज्ञान और दर्शन में क्या भेद है ?
- प्रमुख भारतीय दर्शन कौनसे है ?
- न्याय दर्शन के प्रमुख सिद्धांत कौनसे है ?
- सांख्य के सिद्धांत कौनसे है ?
- दर्शन शास्त्र का महत्त्व एवं उपयोगिता स्पष्ट कीजिए |

❖ आगे पढ़ने हेतु :

- दर्शन शास्त्र का इतिहास, देवराज
- भारतीय दर्शन शास्त्र, धर्मेंद्रनाथ शास्त्री

****

JSDIVSR

MODULE 4

[II] उपनिषद

- ✓ परिचय
- ✓ अध्ययनाचा हेतू
- ✓ उपनिषदांचे वर्गीकरण
- ✓ ईशावास्योपनिषद – महत्त्व
- ✓ ईशावास्योपनिषद – विवरण
- ✓ महत्त्व एवं उपयोगिता

❖ परिचय :

'सद्' नामक धातुको 'उप' और 'नि' यह उपसर्ग लगते हुए **"उपनिषद"** यह शब्द बनता है | अत्यंत श्रद्धाभावासे गुरू के समीप बैठकर अथवा गुरू के द्वारा शिष्य जो परमार्थ विद्या प्राप्त करता है, उस विद्याको उपनिषद् कहा जाता है | आद्य शंकराचार्य जी ने इसे **"अविद्याविध्वन्सिनिब्रह्मविद्या** "– अविद्याका नाश करनेवाली, ब्रह्मज्ञान देनेवाली और त्रितापोंका निवारण करनेवाली विद्या कहा है |

❖ अध्ययनाचा हेतू:

उपनिषद वेदों के ज्ञान कांड में समाविष्ट किए जाते हैं। इसमे गुरू के द्वारा वेदों में निहित गूढ़ एवं रहस्यमय तत्त्वज्ञान, सिद्धांत शिष्य को सरल और बोधरूपसे समझाएं जाते है | यह गुरू – शिष्य का ज्ञान रुपी संवाद ही उपनिषद कहा जाता है और यही इसका उद्देश्य है।

जैसे , **'सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दन:'** – इस उक्ती के अनुसार भगवदगीता यह भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन में हुआ संवाद उपनिषद ही कहा जाता है |

कर्मकाण्ड में अंतिम फल इहलोकमे विजय और परलोक में स्वर्गप्राप्ति ऐसा बताया जाता है | किन्तु यह दोनों नाशवंत है | इसलिए अविनाशी सुख याने आनंद, उसका स्वरूप और उसे प्राप्त करने का मार्ग आदि बातोंका चिंतन यह उपनिषदों के अध्ययनका मुख्य हेतु है |

❖ उपनिषदांचे वर्गीकरण:

आद्य शंकराचार्यजी ने जिन उपनिषदों पर भाष्य किया उनका प्रधान रूपसे अध्ययन किया जाता है | इसमे ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडुक्य, तैत्तरिय, ऐतरेय, छांदोग्य, बृहदारण्यक आदि उपनिषदों का समावेश किया जाता है |

इसके अलावा ७२ अन्य उपनिषदों को प्रकाशित किया गया है, जबकि १०८ नव्य उपनिषदों की जानकारी मुक्तिकोपनिषद में प्राप्त होती है। इन सभी और श्वेताश्वेतर उपनिषद आदि की कुल संख्या १९१ होती हैं। इनमें से १० ऋग्वेद, १९ शुक्लयजुर्वेद, ३२ कृष्णयजुर्वेद, १६ सामवेद और शेष ११४ अथर्ववेद से संबंधित हैं।

❖ ईशावास्योपनिषद

ईशोपनिषद अथवा ईशावास्योपनिषद यह महत्त्वपूर्ण दशोपनिषदोमे सर्वाधिक प्राचीन उपनिषद माना जाता है | शुक्ल याजुर्वेदाके वाजसनेयी संहिताका चालीसवां अध्याय इशोपनिषद है | इस कारण वैदिक संहितामे समाविष्ट होनेवाला यह एकमात्र उपनिषद है | यद्यपि इसमे केवल अठारह मंत्र है किन्तु तत्त्वज्ञान की दृष्टिसे इसे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है | ज्ञान – कर्म समुच्चय एवं आध्यात्मिक और आधिभौतिक जीवनका परस्पर पूरकत्त्व यह दो प्रधान विषय इसमे देखने मिलते है | आइए इसका संक्षिप्त परिचय करे -

१) जगतके प्रति दृष्टिकोन

ईशा वास्यमिदं सर्वम् यत्किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥१॥

अर्थ:

- ईशा वास्यमिदं सर्वम् । - समस्त जगत यह ईशतत्त्वसे ओतप्रोत है |
- यत्किं च जगत्यां जगत् । - इसमें नामरूपकर्माख्य एवं वस्तुमात्र ऐसी दोनों वस्तुएँ है |
- तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा । - इनका उपभोग उनके बाह्य स्वरूपका त्याग करते हुए लेना चाहिए |
- मा गृधः कस्य स्विद्धनम् । - उनकेद्वारा कोईभी धन आदि आकांक्षा ना रखे |

२) उसका परिणाम (ज्ञानप्राप्ती)

यस्मिन्सर्वानि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥ ७॥

अर्थ:

जिस समय समस्त भूतमात्रमे तथा स्वयंमें इसी अविनाशी आत्मतत्त्वकी अनुभूति होगी उस समय वह किसीकी भी घृणा नहीं करेगा और शोक एवं मोहसे रहित होगा | परिणामी वह कर्मसे अलिप्त रहेगा | किन्तु इस आत्मतत्त्वको पहचाने कैसे ?

३) आत्मतत्त्वका (ज्ञान) का स्वरुप

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुध्दमपापविद्धम् ।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः याथातथ्यतोऽ र्थान् व्यदधाच्छाश्वतिभ्यः समाभ्यः ॥ ८॥

अर्थ :

आगे कहते है, यह आत्मतत्त्व सर्वव्यापी, दीप्तिमान,स्थूल - सूक्ष्म शरीरसे रहित, अविद्यारूपी मलरहित, पाप रहित, सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और स्वयंभू ऐसा है |

४) ज्ञान एवं कर्म का समुच्चय

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयंसह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यायामृतमश्नुते ॥११॥

अर्थ:

इसप्रकार किया गया कर्म (अविद्या) यह ज्ञानप्राप्तिके (विद्येचे) अंतिम फलस्वरूप अमृतत्त्वका साधन होता है | इसीलिए कर्मनिष्ठा एवं ज्ञाननिष्ठा इन दोनोंका उचित योग साध्य करना चाहिए | यहाँपर अमृतत्त्व याने देवत्व प्राप्त करना है |

७) अंतिम प्रार्थना

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तंशरीरम्।
ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर ॥ १७ ॥

अर्थ :

ज्ञान और कर्मके योगसे संस्कारित हुआ यह प्राण और यह शरीर अमृतमय हो, इसलिए सदा स्मरण करनेकेलिए योग्य ऐसे परम ब्रह्मतत्त्वका स्मरण कर तथा उसके अनुरूप उत्तम संकल्प कर |

❖ महत्त्व एवं उपयोगिता :

- ज्ञानकी प्राप्तिसे स्वयंका एवं समाजका कल्याण करना यह मनुष्य जन्मका परम उद्दिष्ट होता है, किन्तु इसलिए जीवनमे नैतिकताका स्तर ऊँचा रखना अत्यावश्यक है |
- इस नैतिकता और ज्ञानका परिक्षण तथा उसकी योग्यायोग्यताका निर्णय करनेकेलिए प्राचीन ऋषियोंने आध्यात्मिक अनुभूतिके मानदंडोका स्वीकार किया, जिसका स्वरूप हमें उपनिषदोंके अध्ययनसे पता चलता है |

- यह अध्ययन हम में अध्यात्म की जागृति करता है | श्रद्धा और कर्तव्य यह इस अध्यात्मकी नीव है तथा शान्ति और समाधान यह इसका फलित है |
- विश्वमे सर्वत्र संघर्ष, दुःख, अमंगलताका अनुभव आता है किन्तु यहींपर जीवनके मंगलमय एवं आनंदमय स्वरूपकी अनुभूतिभी प्राप्त होती है | इस अनुभूति के लक्षण हमें इस अध्ययनसे पता चलते है |
- भौतिक जगतमें विकासाभिमुख होते समय शान्ति, समाधान, आनंद आदिके लिए अन्तर्मुख होना परमावश्यक है, इसकी प्राप्तिके लिए उपनिषदों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है |

❖ शब्दार्थ :

- उपनिषद् : वेदों के सारभूत ग्रन्थ |
- आद्य शंकराचार्य : महान आचार्य सन्यासी जिन्होंने अनेक उपनिशादोपर भाष्य लिखे, जिन्हें शांकर भाष्य कहा जाता है |
- दशोपनिषद : प्रमुख दस उपनिषद |
- ज्ञानकाण्ड एवं कर्मकांड : वेदोपर आधारित दो विभाग |
- नामरूपकर्माख्य : नाम, रूप वा कर्म के आधारपर व्यक्त होनेवाले |
- अनुभव : जो बाह्य जगतमे प्राप्त हो |
- अनुभूति : जो अंतर्जगतमे प्राप्त हो |

❖ प्रश्नावली :

- उपनिषद की व्याख्या क्या है ?
- उपनिषदों का वेदोंसे क्या सम्बन्ध है ?
- उपनिषदों के वर्गीकरण के बारेमे सविस्तार लिखिए |
- ईशावास्योपनिषद के विषय कौनसे है ?
- ईशावास्योपनिषद में क्या कहा गया है ?
- उपनिषदों के अध्ययन का क्या महत्त्व है ?

❖ आगे पढ़ने हेतु :

- ईशादि नौ उपनिषद, गीताप्रेस, गोरखपुर
- दहा सार्थ उपनिषदे, हरी र. भागवत

****

JSDIVSR